दुख का सागर

अल्लामा नज्म आफ़न्दी

डूबी हुई दुख के सागर में, सूरज की सुनहरी थाली थी
उस चाँद की दिस को साँझ तलक, शब्बीर से दुनिया ख़ाली थी
बाबा ही के दम के साथी थे, अकबर भी गए असग़र भी गए
तकने को रही एक-एक का मुँह, छाती पे जो सोने वाली थी
यूँ जग में न लागी आग कहीं, इस ढब से न उजड़ा बाग कहीं
सूखी हुई पत्ती-पत्ती थी, टूटी हुई डाली-डाली थी
दो खेत परे जल बहता था, और फूल इधर कुमहलाते थे
बिन नीर ये सूखे जाते थे, और चार तरफ़ हरियाली थी
हैदर के घराने वाले सब, सतवन्त भी थे सावन्त भी थे
सहजे ही उठा ली बन्दों ने, मालिक ने जो बिप्ता डाली थी
सरवर पे हसन की बिध्वा ने, दो चाँद के टुकड़े वार दिये
बच्चे तो जियाले थे ही मगर, माता भी बड़ी दिल वाली थी
क्या लुट के गये कर्बल से हरम, जब आई हैं सखियाँ मिलने को
जिस माँग को पूछा उजड़ी थी, जिस गोद को देखा ख़ाली थी
संसार का चाहा उसने भला, कटवा दिया कुन्बे भर का गला
शब्बीर के मन के साँचे में, करतार ने भक्ति ढाली थी
मारे गए सत की सेवा में, धनबाद है ईश्वर भक्तों को
मुख्ड़ों पे लहू की सुर्ख़ी से, बढ़ चढ़ के ख़ुशी की लाली थी
ये जी से गुज़रने वाले थे, यह बात पे मरने वाले थे
कब मौत से डरने वाले थे, सौ बार की देखी भाली थी
''नजमी''! ये हुसैनी चौखट है, याँ आ के मुरादें मिलती हैं
इस द्वार से भिक्षा ले के चले, आए थे तो झोली ख़ाली थी

एहतेरामे मिंबर

जनाब शकील हसन शम्सी

कर्बला वालों के पैग़ाम को पहुँचाना है
मिंबरों से न किसी शख़्स पे नश्तर फेंको
कम किये हैं कि बढ़ाए हैं अली के दुश्मन
अपने अन्दाज़े ख़िताबत पे ज़रा ग़ौर करो!!

♦♦♦

जो सर को हाथ में लेकर चले वह राही दे
हुसैनियत को भिखारी नहीं सिपाही दे
तू उस ज़बान को गुद्दी से खैंच ले माबूद
जो अपनी क़ौम को बरबादिओ तबाही दे!!

अम्न की जा है ये सफ़े मातम
इससे बुग्ज़ो इनाद मत बाँटो
वास्ता तुमको आले अहमद का
मिंबरों से फ़साद मत बाँटो!!

♦♦♦

दुश्मने मरकज़े तामीर सरे मिंबर हैं
अब तो नावाक़िफ़े तहरीर सरे मिंबर हैं
अहले मजलिस को ये मालूम नहीं है शायद
क़ातिले मक़सदे शब्बीर सरे मिंबर हैं!!